

Universitätsbibliothek Wuppertal

Scholia in Sophoclis tragoedias vetera

Sophocles

Lipsiae, 1888

Corrigenda et addenda

Nutzungsrichtlinien Das dem PDF-Dokument zugrunde liegende Digitalisat kann unter Beachtung des Lizenz-/Rechtehinweises genutzt werden. Informationen zum Lizenz-/Rechtehinweis finden Sie in der Titelaufnahme unter dem untenstehenden URN.

Bei Nutzung des Digitalisats bitten wir um eine vollständige Quellenangabe, inklusive Nennung der Universitätsbibliothek Wuppertal als Quelle sowie einer Angabe des URN.

[urn:nbn:de:hbz:468-1-5413](https://nbn-resolving.org/urn:nbn:de:hbz:468-1-5413)

CORRIGENDA ET ADDENDA.

Pag. 3, 22 verba πρώτος — σάλπιγγα repetuntur in scholio Eurip. Phoen. v. 1377 (ed. Schwartzii p. 388, 25) ubi pro Ἀρχαῖνδας (Valckenaerius) in codd. ἀρχαίων δια vel ἀρχαῖωνδας vel ἀρχαῖδας traditum est.

4, 2 τοῖς πρώτοις] Phil. v. 1305 τοὺς πρώτους στρατοῦ.

4, 3—7 literae in scholiis ad Ai. v. 23, 26 (p. 4, 10—11), 57 (p. 7, 12—13), 59 (p. 7, 23—24), 91 (p. 10, 6—10), 102 (p. 10, 14—15), 105 (p. 10, 25), 134 (p. 13, 11—20), 135 (p. 13, 21—25), 143 (p. 14, 19—p. 15, 6), ad quas illud 'non exstant in L' in commentario critico adscripti, scriptae erant in marginis parte folii codicis I et II nunc abscissa; partim suppletæ sunt a manu recentiore.

5, 19 ἴνα — ἕξῃ] schol. Eur. Orest. v. 427 (p. 147, 11) ἴνα — ἀφέξῃται.

7, 21 φοῖτος] Aesch. Sept. 661 σὺν φοῖτω φρενῶν.

9, 16 ὁμόσε χωρῆσαι] Hom. Π. γ 337 ὁμός' ἦλθε μάχη, Plat. Theaet. 165e, Thucyd. 4, 10, 1 ὁμόσε χωρῆσαι τοῖς ἐναντιοῖς.

11, 30 μαστιγοφόρος] p. 96, 18.

13, 18 ἐν σοι ἐσμέν] Oed. Tyr. 314 ἐν σοι γὰρ ἐσμέν.

15, 3 ἱπποσέλινον] Theophr. Hist. plant. 9, 1, 4 al.

24, 26 λιγυρᾷ μάστιγι] Hom. Π. λ 532.

30, 32 ἐρίπναι] cf. tamen Πισαί p. 452, 2. 6.

34, 13 τὸν λόγον ὑφαρπάζειν] Herodot. 5, 50.

37, 23 παρὰ τὸ λέπειν] παρὰ τὸ ἀλέθειν Semitelus (Σοφοκλέους Ἀντιγόνη Athenis 1887 p. 474); an παρὰ τὸ <ἀλείν> τὸ λέπειν?

43, 29 615] scr. 614.

44, 8 ἐπιμονῇ παιδοποιίας] ἐπὶ νομίμῳ παιδοποιῶ? p. 332, 5 σννοσιαί — εἰς παιδοποιῶν et Plutarch. de lib. educ. 1 τοῖς νομίμον παιδοποιίας γλιχομένοις.

45, 21 πολλάκις θεοῖς] scr. πολλάκις | θεοῖς.

46, 6 ἀμφιθαλῶν] cf. p. 248, 25.

52, 16 περιεσφιμμένος] potius παρεσφιμμένος.

53, 6 ὁ μὴ πλανώμενος et c.] cf. p. 169, 5 μὴ εἰς πολλὰ πλανωμένους.

53, 17 βόσις] Hom. II. τ 268.

55, 2 οὐ λέγει δὲ ὅτι ὕταν] ὁ λέγει δὲ [ὅτι] ὕταν? cf. 448, 10.

59, 32 1099] scr. 1098.

63, 6 λιθόλευστος] Ai. v. 253.

63, 31 946] scr. 646.

67, 1 ἄπτεται τῶν ἀναγκαίων τοῦ χρωτός] scr. ἄπτεται τῶν ἀναγκαίων, τοῦ χρωτός.

68, 4 χαλεπώτατον] χαλεπώτατος?

68, 15 μοιριδίου] μοιριδία δύνασις Antig. 951.

69, 22 εἰκῆ] scr. εἰκῆ.

71, 16 γαρντόν] Hom. Od. φ 54.

71, 17 οὐδαμῆ] scr. οὐδαμῆ.

74, 2 ἔργον ἐπ' ἔργῳ] Hesiod. Opp. 382, Theocr. Idyll. XV 20.

74, 20 συνναῦται] Ai. v. 902.

77, 7 ἔρχεται Τευκρός] cf. 88, 20. 187, 13.

89, 29 749] scr. 747.

94, 16 φιλίῳ,] dele comma.

98, 9 οἱ — φασίν] repetuntur in schol. Eur. Phoen. v. 125 (p. 266, 4).

100, 12 ἐπεμβῆναι] Electr. 456.

102, 13 ἄγγος] El. 1118.

102, 30 2284] scr. 2384.

106, 33 Τπερμήστρα legitur etiam in scholio Eur. Hec. v. 886 (cod. MB) et Orest. v. 872 p. 185, 18 (cod. MTB), ὕπερμας in scholio Phoen. v. 173 (cod. M); Κλειμήστρα est in scholio Orest. v. 872 p. 185, 8 (cod. MAB), Κλειμήστρα ibid. cod. T.

107, 18 πόντι'] scr. πόντι'.

114, 24 ψυχῆ] scr. ψυχῆ'.

123, 5 fort. transponendum εἰς τὰς κεφαλὰς τῶν ἀναιρομένων coll. p. 124, 7.

124, 30 785] scr. 818.

134, 18 τεθναμασμένος ἐν τῷ ἀγωνίσματι] potius ἐπὶ τῷ ἀγωνίσματι.

136, 23 ἄρμενα] Eustathius ad Hom. Od. ε 254: σιοπητέον δὲ μήποτε ἢ Ὀμηρικῆ αὐτῆ κλήσις τοῦ „ἀρμένον τῷ ἰσθῶ ἐπικρίον“ παρήγαγε τοὺς πολλοὺς ἄρμενα ἰδιωτικώτερον μὲν ὅμως δὲ οὐκ ἀλόγως τὰ ἰστία καλεῖν; Theocr. Id. XXII 13 κρέμαται δὲ σὺν ἰστίῳ ἄρμενα πάντα | εἰκῆ ἀποκλασθέντα; neograecum est ἄρμενον et verbum ἀρμενίζειν.

138, 28 101] scr. 102.

142, 20 παρὰνόπτεις τὰς φρένας] Eur. Hipp. 238.

- 162, 24 *πρώτη λόγῳ*] *α' λόγῳ* L; an *προλόγῳ*?
- 163, 12 *ἐμφαίνει*] *potius ἐμφαίνει*; cf. 113, 5.
- 166, 31 *οἰακονόμοι* legitur apud Aesch. Prom. 156.
- 168, 11 *ἐμφοβος*] Oed. Col. v. 39.
- 169, 22 *ἐξαιρούσι*] schol. Eur. Or. 1484 (p. 228, 3): *ἴδιον*
δὲ τῆς τραγωδίας τὸ τὰ μικρὰ τῶν πραγμάτων ἐξαιρεῖν.
 172, 7 *ἀπὸ σοῦ*] cf. 167, 11.
- 176, 7 *διανεμομέναν*] *potius δαινυμένων*; cf. 323, 23.
- 189, 20 *ἦκον*] cf. 85, 16.
- 192, 6 *στήσαι*] *potius στήναι*; cf. 63, 13.
- 193, 8 *τριῶν κλεῦθτων*] Oed. Tyr. 1398.
- 199, 31 1241] scr. 1240.
- 207, 31 907] scr. 905.
- 217, 22 *verba τοντέσιν — παραβαλίμεν ad κρατή* v. 60
 refert Semitelus.
- 217, 27 *verba καθὸ ἀσθενέστεραι* includenda.
- 218, 5 *ὥστε* supplet etiam Semitelus.*)
- 218, 14 *τὸ | γὰρ*] scr. *τὸ γάρ* |.
- 218, 21 *δέξομαι* correxit etiam Semitelus.
- 220, 18 *ἢ πρὸς πρὸς τὸ δίκῃ ἐστίν* conii. Semitelus; cf.
 p. 221, 10.
- 221, 30 *errexerunt*] scr. *erexerunt*.
- 223, 24 scr. *οὔτω*.
- 228, 27 *ἐμφυλλῶν*] *αἰμ' ἐμφύλλιον* est Oed. Tyr. v. 1406.
- 230, 12 et 408, 23 *ὡς ὅτι* legitur etiam in schol. Eurip.
 Phoen. v. 44 (p. 255, 11).
- 230, 18 *χρητὴν γῆν*] *χρητὴ γαῖα* legitur apud Hom. Il. ζ 464.
- 233, 29 *ἀναρῶς*] scr. 18 *ἀναρῶς*.
- 234, 18 *ὑπό*, quod suppleveram *Beitr.* p. 39, supplet etiam
 Semitelus.
- 235, 15 *συγκλείουσι*] *συγκλώθοσι* Semitelus.
- 245, 22 scr. *βορέου*.
- 255, 14 *δυνάμει*] cf. 343, 20. 360, 10.
- 256, 12 *περιέφρυσεν*] *περιπέφρυσεν* Semitelus.
- 256, 14 *ἐλιτενῆς*] Theocr. XIII, 42.
- 257, 11 *ἔσχατον*] corrigendum *ὑψηλόν*.
- 257, 20 *ἦ τὸ*] *ἦτοι* Semitelus.
- 258, 4 *πατῆρ*] *ἀνῆρ* Semitelus.
- 259, 17 *<εἰς>*] an *<ἐπὶ>*? cf. 59, 3 et schol. Eur. Phoen.
 4 (p. 246, 19): *εὐεπιφορος δὲ ὁ Εὐριπίδης πρὸς τὸ et c.*
 259, 32 118] scr. 117.
- 261, 18 *ἐγείρεται*] Hom. Il. β 440 *ἐγείρομεν ὄξυν Ἀρηα*.

*) Semiteli editionem absoluto demum opere meo commentarioque critico iam confecto inspicere licuit.

- 263, 18 ἄλαστα πεπονθόσιν] Oed. Col. 537 ἔπαθον ἄλαστ'.
- 266, 30 796] scr. 794.
- 267, 6 verba καὶ — ἔασιν ad v. 1035 ἄπρακτος refert Semitelus; sed cf. p. 380, 15.
- 268, 4 βαλῶν correxi.
- 273, 16 τόπον] τάφον coni. etiam Semitelus. ἐντάφια] El. 326.
- 274, 10 ἄμφηκες γὰρ τὸ ξίφος] ξίφος ἄμφηκες dixit Homerus II. φ 118.
- 279, 23 βούκρανοι] scr. ταυρόκρανοι; Eur. Orest. 1378 et schol.: τοὺς ποταμοὺς ταυροκράνους ἐξωγράφουν.
- 282, 16 πημονῆς ἄτεσ] fort. delenda.
- 284, 14 μέλαινα] cf. 452, 7 et Eur. fr. 102.
- 285, 13 τίπτει ἐν ταῖς ὑφάλαις πέτραις] etym. m. p. 66, 29: παρὰ τὸ ἐν ἄλλ κύνειν.
- 286, 5 πέλαιγος κακῶν] Aesch. Pers. 436 κακῶν δὴ πέλαιγος ἔρωγεν μέγα | Πέρσαις.
- 286, 18 supplendum οἷς <ῆ> τοῦ βίου ἀρετή.
- 288, 23 supple <ἐν> τοῖς ἰδίοις ἑαυτοῦ τόποις.
- 301, 33 λαθραῖόν σου] cf. 251, 20.
- 319, 30 1047] scr. 1048.
- 319, 31 9] scr. 8.
- 327, 10. 16 et 336, 12 ἐπὶ τῷ] retinendum ἐπὶ τό; cf. 80, 4.
- 124, 11. 205, 25. 310, 3. 317, 3. 345, 16. 389, 26. 462, 22.
- 328, 28 μέλας ὁ θάνατος] Hom. II. β 834 μέλανος θανάτιο.
- 334, 16 πληθῶς] πληθους?
- 337, 14 1016] scr. 1015.
- 339, 8 scr. ἐποχῆ.
- 345, 13 προστήσης] potius προσστήσης.
- 348, 11 scr. χάλυβος | λιθοκόλλητον στόμιον παρέχουσ'.
- 358, 9 κοινότερον] scr. καινότερον.
- 360, 6 γλυφίδων] Hom. II. δ 122.
- 361, 9 γενναῖος] Phil. 475.
- 369, 9 ἐναντιούμενος] Phil. 643.
- 375, 25 γνώμης κρατήσεις] Ai. 484.
- 382, 6 δεῖ τῶν] scr. δεῖ, τῶν.
- 383, 14 ἔμαντῶ] cf. 356, 14 ἐξευρίσκει — ἑαυτῶ.
- 389, 17 κεραννίας] φλόξ κεραννία legitur apud Aesch. Prom. v. 1017.
- 390, 11 ἐξ ὑποστροφῆς] El. 725 ἐκ δ' ὑποστροφῆς.
- 397, 6 πωρητῶν] πωρήτων L.
- 399, 25 42] scr. 41.
- 399, 29 fr. 5] scr. fr. 9.
- 402, 24 γινομένων] potius γενομένων.
- 404, 14 τὴν θυήν] τὸ θυεῖν?

- 413, 14 ὀφθαλμοὶ γὰρ ὀφθαλμοῦς αἰδεῖσθαι ποιοῦσιν]
 resp. fort. Eur. fragm. 458 αἰδῶς ἐν ὀφθαλμοῖσι γίγνεται, τέκνον.
 414, 8 ἐκταδόκος] Aesch. Suppl. 713.
 418, 25 σωτήριος] Oed. Col. 487.
 422, 13 cf. p. 431, 10 πέφαντες τὸν θυμόν.
 425, 10 μελίκρατον] Hom. Od. κ 519.
 434, 12 ἐγκαρπα] Oed. Tyr. 25.
 435, 1 ἡγουμένον τοῦ] ser. ἡγουμένον.
 435, 19 Μορίου] ser. μορίου.
 437, 13 ὡς ἐπὶ κεράμου] Herodot. 3, 6 κέραμος πλήρης
 οἴνου.
 440, 4 ταύτην] ser. 879 ταύτην.
 440, 32 ἀνιπτον] ser. ἀνιπτον v. 899.
 444, 31 IV] ser. I.
 445, 22 κληῖς] ser. κλής.
 447, 9 potius ἐπ' ἀριστερά.
 448, 2 φάλαρα πάλων] interpretamentum est in L.
 457, 21 ser. χορός.
 463, 8 ἀποαίτεσθαι] cf. Hesych. πολλὰ χαίρειν φράσας:
 ἀποαξάμενος.
 464, 25 νῶιν] ser. νῶν.